आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:12-08-14

पतित-पावन, बबूलनाथ या कहे जादूगर बाप ने हम बच्चों को याद की यात्रा का महत्व समझाते हुए कहा, याद की यात्रा से ही तुम्हारी कमाई जमा होती है, तुम घाटे से फायदे में आते हो, विश्व के मालिक बनते हो.

आज भी बहुत बच्चे है जो कहते है निराकार को याद कैसे करें? या बाप को एक्युरेंट याद कैसे करें?

बाबा ने आज हम बच्चों को बहुत सहज रीति से याद की यात्रा सिखलाते हुए समझाया की पहले स्वयं को आत्मा के रूप में देखो और फिर वह पतित-पावन बाप की महिमा के गुणगान करो. यह बहुत ही सहज याद की विधि है जिसे हम देही-अभिमानी भी बनते जाते और बाप की महिमा के गुणगान कर बाप को याद करने से हमारी आत्मा भी पावन बनती जाती हैं. इस लिए बाप कहते है बाप की याद को योग अक्षर की जगह याद की यात्रा अक्षर काम में लाओ.

विधि -1

- पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करो --> तुम जन्म-जन्मांतर पाप आत्माये हो ना. यह है पाप आत्माओं की दुनिया. सतयुग है पुण्य आत्माओं की दुनिया.
- बाप की महिमा के गुणगान करो --> अब पाप सब कटकर पुण्य कैसे जमा हो? एक बाप की याद से ही जमा होंगे.

विधि -2

- पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करो --> यह हम आत्माओं को पढ़ाने वाली पाठशाला है. यह लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना हम आत्माओं का ऐम ऑबजेक्ट है. इस पढ़ाई से ही हम आत्माये पवित्र बन पवित्र दुनिया के मालिक बनेगी. हम आत्माये विश्व की मालिक बनेगी. 5 हजार वर्ष हुए, हम आत्माये विश्व की मालिक थी. कितना ऊँच पद था, हम आत्माओं का.
- बाप की महिमा के गुणगान करो --> जरूर बाप ही हमें ऊँच बनायेंगे. बाप को ही परमात्मा कहते है, उनका असूल नाम है शिव. बाबा को तो बबूलनाथ भी कहते है, जो हम कांटों को फूल बनाते हैं.

विधि -3

- पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करो --> हमारी आत्मा पतित बनी है, उनको पावन जरूर बनना है. हम आत्माये ही महान आत्मा, पवित्र आत्मा और पाप आत्मा बनती हैं. हम आत्माये देहधारी बन कर जन्म-मरण में आती है, पुनः जन्म लेती हैं.

- बाप की महिमा के गुणगान करो --> उन्हें परमात्मा या ईश्वर कहते है. वह है ही विदेही, विचित्र, निराकार. उनकी आत्मा गर्भ से जन्म नहीं लेती, वह है पुनः जन्म से परे.

विधि -4

- पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करो --> 84 जन्मो के बाद हमारी आत्मा अब पाप-आत्मा बन गई है. अभी हम आत्माओं को परमात्मा को याद करना है.

- बाप की महिमा के गुणगान करो --> बाबा की याद का योगबल से ही हम आत्माये पापों को खत्म करती है और पुण्य आत्मा बनती है. हमें सुख भी तब मिलेगा जब हम पूरा पुण्य आत्मा बनेंगे.

विधि -5

- पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करो --> इस याद की यात्रा से हम विश्व के मालिक बनते है. पहले हम विश्व के मालिक थे ना, फिर हमने 84 जन्म लिए सूर्यवंशी-चंद्रवंशी बने.

- बाप की महिमा के गुणगान करो --> कहते भी है भक्ति का फल भगवान देते है. भगवान कोई देहधारी को नहीं कहा जाता है, वह है ही निराकार शिव. उनके लिए ही तो हम शिवरात्रि भी मनाते है. तो आयेंगे भी जरूर. वह आते ही है ब्रह्मा के तन में. वह तो सर्व आत्माओं का पिता हैं. ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी उनके बच्चे हैं. शिवबाबा अपने बच्चे ब्रह्मा में प्रवेश कर हमको ज्ञान देते हैं.

बाबा ने ऐसे सारी मुरली में हमें याद कि यात्रा सिखाई है जिसे हम देहि-अभिमानी बने और याद से हमारी आत्मा भी पावन बनती जायें.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .